[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3596

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

प्रकृति एवं रंग ;पर्यावरण के संदर्भ मेंद्ध

डॉ साधना चौहान
सहायक प्राध्यापक, शा स्ना. महाविद्यालय धार
शोधार्थी – श्रीमति दीपिका सेन

मानव जीवन और प्रकृति का संबध पृथ्वी की रचना के साथ अटूट रहा है, मानव ने प्रकृति से प्राप्त सभी चीजों का उपभोग अपने जीवनयापन और मनोरंजन के लिये किया है, एक ओर उसे प्रकृति से भोजन, आवास और वस्त्र प्राप्त होता है तो दूसरी ओर प्रकृति के दृश्यों को देखकर और कलाकारों के द्वारा चित्रित कर शान्ति की अदभूत अनुभूति होती है। सर्वप्रथम कलाकारों द्वारा जो चित्र चित्रित किये गये उनमें प्रकृति चित्रण नदी, पेड़, पौधे, पर्वत और पशु पक्षी सभी चित्रित किये गये तथा इन्हें चित्रित करने में सहायक सामग्री रंग, तुलिका वह भी प्रकृति से प्राप्त होती है। सर्वप्रथम कलाकारों ने प्रकृति से प्राप्त रंगों का उपयोग अपनी कलाकृति में किया। आदिवासी लोक कला में माण्डना, फड़, अल्पना, मधुबनी आदि में प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया गया है। ये रंग कभी कभी पत्थरों , फूलों तथा पत्तियों से बनाए जाते है। प्रकृतिमें जिन रूपों की ओर हम आकर्षित होते है तथा जो हमें आनन्द प्रदान करते है, उनकी प्रतिकृति मात्र कला नहीं है उन रूपों का आधार लेकर उनसे प्रभावित होकर तथा उनका रूपांतरण करके कलाकृतियों का निर्माण होता रहा है।'प्रकृति में अनेक ऐसी आकृतियों को देखकर हम आनन्दित होते है जिनका कोई अर्थ नहीं होता है। केवल उनकी चाक्षुष आकृति अपनी छाप छोड़ती है। किन्तु चित्र में किसी रूप में सादृश्य की तथा अर्थ की इच्छा बनी रहती है। झरने, नदी, समुद्र में मोटे तने के काठ में रेखाओं की आवृत्ति आकर्षित करती है।' 1

'मानव जीवन की भांति रंग प्रकृति के उदय का इतिहास भी बड़ा रहस्यमय विराट और अज्ञात है। मनुष्य ने जिस समय प्रकृति की गोद में अपनी आंखें खोली उस समय से ही उसने अपने जीवन को सुखी व समृद्ध बनाने की कोशिश की और इसको फलीभूत करने हेतु उसने ऐसी कृतियों का सृजन किया जो उसके जीवन को सुखद और सुचारू बना सके।' 2

फड़ चित्रण की प्राकृतिक रंग योजना

फड़ शैली के अंतर्गत फड़ कलाकार कपड़े पर (जो विशेष पद्धति से तैयार किया जाता है) चित्रण करता है। यह कपड़ा सख्त मोटा व चिकना होता है। फड़ कलाकार सर्वप्रथम इस पर तुलिका के द्वारा पीले रंग से फड़ का पूरा संकेत के रूप मे रेखा चित्र के लिये पहले पेंसिल का प्रयोग ही करते है पूर्ण रेखांकन होने के बाद स्तर दर स्तर से रंगों का प्रयोग किया जाता है।

फड़ चित्रण में चितेरे आधुनिक रासायनिक रंगों का उपयोग करने के बजाए आज भी पारंपरिक प्राकृतिक रंगों का ही इस्तेमाल करते है। ये रंग पत्थर व अन्य प्राकृतिक स्त्रोंतो से तैयार किए जाते है। इसके बाद त्वचा के लिये सिंदूरी रंग भरा जाता है फिर कमशः हरा, भूरा, लाल रंग भरने के बाद इन आकृतियों को बाह्य रेखाएं काले रंग से बनायी जाती है। शारीरिक आकृतियों में केसरिया रंग भरने के पश्चात पीले रंग प्रयोग आभूषणों, वस्त्रों, अलंकरणों के रूप में किया जाता है। हरे रंग का प्रयोग वस्त्रों, दुपट्टों , प्राकृतिक दृश्यों आदि स्थानों पर किया जाता है इसके पश्चात गेरू रंग का प्रयोग महलों, भवनों , झरोखे, दीवारों पर अलंकरण के रूप में किया जाता है। गेरू के पश्चात लाल रंग का प्रयोग किया जाता है जो कि सर्वाधिक मात्रा में महिलाओं व पुरूषों के वस्त्रों में एवं पशुओं तथा अलंकरणों के रूप में किया जाता है अन्त में इन सभी आकृतियों को उभारने के लिये काले रंग का प्रयोग किया जाता है।
क्लाकृति में पात्रों को उनके चरित्र के अनुसार कहानी व घटनाओं को व्यवस्थित कर चित्रण किया जाता है।

रंग विधान

एक ओर जहां फड़ शैली की परंपरागत सीमाएं कलाकार को बांध कर रखती है वहीं दूसरी ओर रंगों के प्रयोग की अपनी भी सीमाएं है। इस कला में प्राकृतिक रंगों का महत्व दिया जाता है। जो कि मुख्यतः वनस्पति , पत्थरों व प्राकृतिक वस्तुओं से प्राप्त होता है। फड़ कला में प्रायः कृत्रिम रंगों का प्रयोग वर्जित हैं विभिन्न प्रकार के रंग विशेष कर के पत्थरों को पीस कर उनमें गोंद या सरस मिला कर रंग तैयार किए जाते है प्राकृतिक रंगों द्वारा यह एक तरफ तो कलाकृतियों में चार चांद लगा देते है वहीं दूसरी ओर गोंद व सरस मिला देने से रंगों का स्थायित्व बढ जाता है और यह वर्षों तक फीके नहीं पड़ते है तथा इनके चटकीले होत हुये भी आंखों को नहीं चुभते है।
इन कपड़ों पर गिलहरी के बालों से बनी परंपरागत तुलिकाओं की दक्षता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि कपड़े पर पेंसिल के रेखाचित्र बनाने के बजाए ये चितेरे सीधे ही पीले रंग से आकृतियों का चित्रण करते है। इसके बाद पक्के

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंग के रूप में पीला, हरा, कत्थई , हीगलू, आसमानी रंग भर कर अंत में स्थायी भर दी जाती है। मिट्टी से बने रंगों की खासियत यंह है कि उनकी चमक वर्षों तक रहती है। सौ वर्ष से भी अधिक पुरानी चित्रकारी के नमूने शाहपुरा के कई मंदिरों में और देवनारायण के देवालयों में देखे जा सकते है ये हीगलू तथा गेरू सहित सभी रंगों को शिला पर कई कई दिने घोट कर तैयार करते थे।

फड़ कला में मुख्यत : सात रंगों को ही प्रमुखता दी जाती है। जिनमें प्रायः हरा, नीला, गेरू, लाल, केसरिया, पीला रंग प्रमुख है फड़ कला के चित्रों में रंगों प्रमुखता दी गयी है इन रंगों से कलाकृति मे प्रायः नयी ताजगी और सौम्यता झलकती है। ये रंग दर्शकों की आंखों को भाने वाले सुहाने व आकर्षक होते है इस कला में कुछ रंगों को किसी विशेष परिस्थिति के कारण वंश प्रयुक्त किया जाता है। जैसे लाल रंग राजा के वस्त्रों में, हरा रंग खलनायक के रूप मे, नीला रंग राक्षस व भयानक रूप में आदि। 'वस्तुतः यह रंग बनाने की एक विशिष्ट तकनीक है इस कला में मुख्य रूप से जिन प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है वे इस प्रकार है :–

केसरिया रंग फड़ कला के अंतर्गत इस रंग का महत्वपूर्ण स्थान है। इस रंग को बनाने के लिये पीले व सिंदूरी रंग का भी प्रयोग किया जाता है।

पीला रंग इस रंग को हड़ताल भी कहा जाता है यह मुख्यतः केमूले के फूलों के रस से निर्मित किया जाता है किन्तु वर्तमान मे अभ्रक की खानों से निकलने वाले पत्थर पेवड़ी को पीस कर पीला रंग तैयार किया जाता है।

हरा रंग इस रंग को जगाल कहा जाता है। यह रंग तांबे की खान से निकाला जाता है इस रंग का प्रयोग वस्तुतः वस्त्रों वनस्पतियों में किया जाता है।

लाल रंग इस रंग का अपना अलग महत्व है इस रंग को प्रायः सग्रम कहा जाता है यह मकरी व पारा निकालने वाली खान से प्राप्त किया जाता है इसे बाट कर गोंद मिला कर उपयोग किया जाता है।

भूरा रंग फड़ कला में भूरे रंग का एक अलग ही प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यह रंग मुख्य रूप से पहाड़ी मिट्टी जिसे गेरू कहा जाता है इसे प्राप्त मिश्रण से भूरे रंग का निर्माण किया जाता है।

हल्का नीला रंग यह प्राकृतिक वनस्पतियों से प्राप्त होने वाला रंग है। इसको इण्डिका कहा जाता है तथा इसकी खेती कोटा में होती है। इस रंग को बनाने के लिये नील व चूने के मिश्रण को मिलाकर बनाया जाता है।

गहरा नीला रंग इस रंग को मोरथोथा भी कहा जाता है जो कि एक जहरीला पत्थर होता है। उसी पत्थर को पीस कर बारीक मिश्रण तैयार कर इस चित्रण में प्रयुक्त किया जाता है।

काला रंग फड़ कला में यह रंग अपनी विशिष्ट महत्ता रखता है यह रंग प्रायः काजल से बनता है अतः फड़ कलाकार प्राकृतिक रंगों द्वारा फड़ कला मे एक विशेष आकर्षण उत्पन्न करता है। तथा रंगों मे ही कलाकृतियों एवं शैली के नये रूप निकल कर सामने आते है। पूर्णतया प्राकृतिक रंगों से तैयार किए जाते है। यही कारण है कि तमाम चटकीले रंगों के बावजूद फड़ के रंग आंखों को ठंडक पहुंचाते है। मिट्टी से बने रंगों की खासियत यंह है कि उनकी चमक वर्षों तक रहती है। सौ वर्ष से भी अधिक पुरानी चित्रकारी के नमूने शाहपुरा के कई मंदिरों में और देवनारायण के देवालयों में देखे जा सकते है।' 3

निष्कर्ष

कला ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक व वैज्ञानिक युग तक कला का विकास क्रम चलता रहा है कला के इस विकास में सृजन को परंपरा का मुख्य योगदान मानना चाहिये। भाव मे रस अनुभूति भावाव्यक्ति आदि आदर्शों की प्राप्ति हेतु कला का सृजन करता है। मानव आदिकाल से रेखाओं आकारों एवं रंगों का दास रहा है प्राचीन समय में पहाड़ों को काट कर मंदिरों का निर्माण हुआ है। भित्तियों पर विभिन्न प्रयोग किये गये ताड़ पत्र एवं कागज को जो कुछ भी उपलब्ध हुआ उसे सृजन का माध्यम बना लिया। रेत, मिट्टी , खड़िया, कोयला जैसे रंगों का उपयोग हुआ। प्रायः लोक कला की उत्पत्ति लोक शब्द से मानी गयी है लोक शब्द अंग्रेजी के फोक शब्द का रूपांतरण है। फोक वह अवस्था है जिसमे मानव स्वतंत्र रूप से प्रकृति के संपर्क में रहता है। परंपरागत लोक रूचि को जीवित रखने हेतु भारत वर्ष के विभिन्न प्रदेशों में लोक कला का कार्य संस्कृति एवं दर्शन की दृष्टि में अनुप्रयेय है। हम हमारी प्रकृति से इतनी आत्मीयता से जुड़े है कि उसकी उपस्थिति को हम सर्वत्र अनायास ही उकेर लेते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 *चित्रकला के मूलाधार– डॉ. शुकदेव श्रोत्रिय, प्रतियोगी प्रकाशन– 2010*
2 *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास– डॉ. रीता प्रताप, राजस्थान हिन्दी, ग्रन्थ अकादमी, जयपुर–2012*
3 *राजस्थानी लोकोत्सव, भारतीय लोककला मण्डल– चंद्रमोती जयपुर–1957*